साहित्यिक शोध – अर्थ – स्वरूप एवं क्षेत्र

डॉ0 वर्षा रानी

असि. प्रो. संस्कृत – विभाग,
डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय
आगरा

सहितस्य भाव साहित्यम् अर्थात् सहित का भाव होना ही साहित्य है । आचार्य विश्वनाथ के अनुसार वाक्यम् रसात्मक काव्यम[1] (रसात्मक वाक्य ही काव्य है)। महावीर प्रसाद के शब्दों में अंतःकरण की वृत्तियों का चित्र काव्य[2] है। साहित्यिक शब्द साहित्य+इक प्रत्यय[3] के योग से बना है। मानव जाति सृष्टि के आरंभ से ही शोध शील रही है। यह शोध शीलता की मूल प्रवृत्ति ही विविध ज्ञान–विज्ञान और उसे प्रसूत प्रगति का स्रोत है। वास्तव में शोध शब्द का प्रयोग पाश्चात्य देशों में प्रयुक्त रिसर्च शब्द के पर्याय के रूप में होता है। विषय के विश्लेषण विवेचन कि जिस वैज्ञानिक पद्धति को अपनाकर पाश्चात्य देशों के विश्वविद्यालयों में रिसर्च का कार्य होता था उसी का अनुकरण करते हुए भारतीय विश्वविद्यालयों में भी शोध कार्य प्रारंभ किया गया है।

संप्रति रिसर्च के पर्याय के रूप में सर्वाधिक प्रचलित एवं सर्वस्वीकृत शब्द 'शोध' ही है शोध शब्द शुध् धातु में घय्य प्रत्यय लगाने से बनता है शुध् धातु का अर्थ होता है – सुधारना, शंकाओं का निवारण करना, शुध करना इस से निर्मित संज्ञा श्शोधन" का अर्थ है शुद्ध या पवित्र करना, दुरुस्त करना, छानबीन, जांच, अनुसंधान। शोधन में सम् उपसर्ग के संयोग से संशोधन शब्द निर्मित होता है, जिसका कोशगत अर्थ है– शुद्ध करना, सुधारना, संस्कार करना इस प्रकार स्पष्ट है कि शोध में शोधन और संशोधन के साथ–साथ अनुसंधान के निहितार्थ भी भली प्रकार समाहित है। शुद्ध शब्द संस्कार परिष्कार के आशय के साथ–साथ खोजने, मनन–चिंतन करने, जांचने, परखने के अभिप्राय को भी अपने लघु कलेवर में समेटे हुए है।

हिंदी में 'शोध' शब्द स्थूल खोजने की क्रिया से लेकर सूक्ष्म चिंतन–मनन और परीक्षण की क्रियाओं तक के आशयों को समाहित किए हुए हैं गोस्वामी तुलसीदास ने खोजने की स्थूल क्रिया के लिए शोध के तद्भव रूप 'सोध' का प्रयोग करते हुए लिखा है– सीय सोध कपि भालु सब,बिदा किये रघुनाथ। गोस्वामी जी ने इसे खोज के संज्ञा दृ रूप में प्रयुक्त करते हुए लिखा है अब लगि नहिं सिय सोधु लहयो है। उन्होंने सुक्षम चिंतन–मनन, मंथन आदि के अर्थ में भी इस शब्द का व्यवहार किया है। तात धरम मत तुम सब सोधा * में शोधन का यही सूक्ष्म रूप विद्यमान है।[4]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह ज्ञात होता है कि शोध शब्द पर्याप्त प्राप्त सामग्री के परिष्कार या संशोधन तक ही सीमित नहीं है अपितु यह तथ्यों की खोज और तत्वों के चिंतन–मनन के अर्थ का भी द्योतक है।

साहित्यिक शोध का स्वरूप वैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय शोध की अपेक्षा अधिक जटिल होता है। साहित्य की स्वरूपगत जटिलता साहित्यिक शोध की जटिलता का मूल कारण होती है। जहां, विज्ञान का बोध भौतिक है, समाज समाज शास्त्रों का बोध वैचारिक है, वहां साहित्य का बोध भौतिकता और वैचारिकता से आगे अनुभूतिपरक है, जिसमें विचार या चिंतन के साथ–साथ भावना और कल्पना का भी सामंजस्य रहता है। इस संबंध में डॉ नगेंद्र का मंतव्य है कि साहित्य में आत्मा की प्रधानता है। अतः साहित्य के अध्ययन में आत्म तत्व का बहिष्कार कर एकांत वस्तुपरक अध्ययन की संभावना नहीं की जा सकती। इस प्रकार का अध्ययन वस्तु से उलझकर जड़ बन जाएगा क्योंकि साहित्य तत्वत–वस्तु नहीं अनुभूति है। इसलिए साहित्यिक शोध के लिए शोधक में ज्ञान–वृत्ति के साथ–साथ सृजन, सौंदर्य और संस्कृति की पोषक भाव–का समुचित संयोग भी अभीष्ट है। अर्थात बौद्धिक विश्लेषण क्षमता के साथ–साथ सौंदर्य ग्राही सृजनात्मक प्रतिभा का होना भी आवश्यक है। साहित्य का कलात्मक प्रभाव भावात्मक होता है। उसका लक्ष्य लोकरंजन तथा लोकमंगल है। साहित्यिक शोध में भी लोक मंगल की प्रेरणा निहित रहती है। शोधक अनेक बार ऐसे तथ्यों या तत्वों की खोज करता है जिनसे सांप्रदायिक, धार्मिक, राजनीतिक संकीर्णतों और भेदभावों के उन्मूलन की प्रेरणा मिलती है तथा भावात्मक एकता और सांप्रदायिक सामंजस्य का पथ प्रशस्त होता है। डॉक्टर मलिक मोहम्मद का 'वैष्णव भक्ति आंदोलन का अध्ययन' तथा डॉ. निजामुद्दीन का हिंदी में 'राम भक्ति संबंधी महाकाव्यों का अध्ययन' इसी प्रकार के शोधात्मक प्रयास है।

साहित्यिक शोध का क्षेत्र

साहित्य की विकास प्रक्रिया के पांच सामान्य सूत्र निर्धारित किए गए हैं –

1. साहित्यकार की सृजनात्मक प्रतिभा
2. परंपरा
3. परिवेश
4. द्वंद
5. संतुलन[5]

इन उपर्युक्त तत्वों के आधार पर साहित्य के विकास की प्रक्रिया रचनाकार की प्रतिभा की रचनात्मक ऊर्जा से अनुप्रणित रहती है। किसी भी रचनाकार की प्रतिभा को परंपरा के आदर्शात्मक तत्वो और परिवेश की यथार्थ समस्याओं के द्वंद से गुजरना पड़ता है और अंत में आदर्श और यथार्थ में सामंजस्य संतुलन स्थापित होता चलता है, किंतु संतुलन के बाद फिर नया द्वंद प्रारंभ हो जाता है और नया चक्र चलता रहता है।

डॉ हरिश्चंद्र शर्मा अपनी पुस्तक शोध प्रविधि मैं प्रबुद्ध एवं पारदर्शी प्रतिभा वाले शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए साहित्य इतिहास क्षेत्र में शोध की अनेकानेक संभावनाएं बताते हुए विभिन्न आयाम प्रस्तुत करते हैं–

कृतिकारों और कृतियों की खोज

इस वर्ग मैं अज्ञात या फिर अल्प ज्ञात कवियों के जीवन वृत्त तथा कृतियों एवं पांडुलिपियों की खोज, संपादन के साथ–साथ युग प्रवर्तक साहित्यकारों के ऐतिहासिक महत्व और योगदान का मूल्यांकन आदि शोध के विषय समाहित है।

प्रेरणा स्रोतों और प्रभावों का अध्ययन

इस वर्ग में संत, सूफी, कृष्ण, राम, रीति से संबंधित परंपराओं या धाराओं के प्रेरणा स्रोतों के साथ–साथ स्वदेशी और विदेशी धाराओं के प्रभाव का अध्ययन समाहित है।

विकासात्मक अध्ययन

इस वर्ग में सभी परंपराओं तथा धाराओं का प्रथक प्रथक प्रारंभ से अब तक का विकासात्मक अध्ययन, रहस्यवाद,
छायावाद, प्रगतिवाद आदि तत्वों का विकासात्मक अध्ययन, अद्वैत, शुद्धाद्वैत, विशिष्टद्गैत, द्वैत, अद्वैत आदि चिंतनों का विकासात्मक अध्ययन, दूत काव्य, नीति काव्य, बारहमाह, महाकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक काव्य, उपन्यास, नाटक, कहानी आदि गद्य विधाओं का पृथक पृथक विकासात्मक अध्ययन समाविष्ठ है ।

युगीन परिवेश, साहित्य और प्रवृत्तियों का अध्ययन

इस वर्ग में प्रत्येक युग के परिवेश, साहित्य और प्रवृत्तियों के निरूपण से संबंधित युगीन इतिहास के साथ–साथ युग युगीन अखंड इतिहास के लेखन और पुनर्लेखन की आवश्यकता सदैव बनी रहेगी ।

भाषा और शिल्प के विकास का अध्ययन

अपभ्रंश, अवधी, मैथिली भाषा, ब्रजभाषा , राजस्थानी , खड़ी बोली आदि काव्य भाषाओं के विकासात्मक अध्ययन के साथ– साथ काव्य रूपों, छंदों , अलंकारों आदि के विकास का अध्ययन क्षेत्र समाहित है ।

विभिन्न युगों, परंपराओं, कवियों, कृतियों, प्रवृत्तियों आदि का तुलनात्मक अध्ययन[6]

उपर्युक्त सभी आयाम शोध के लिए नए विषय प्रस्तुत करते हैं । वास्तव में साहित्य ऐतिहासिक शोध का लक्ष्य तथ्य आख्यान के माध्यम से साहित्यिक कृतियों के ऐतिहासिक क्रम में निहित उस सांस्कृतिक चेतना की खोज करना है जो पूरी साहित्यिक श्रृंखला को एक सूत्र में गुम्फित करती है। विभिन्न युगों की प्रस्तुति और परिवेश की विभिन्नताओं के रहते हुए भी किसी देश या समाज के साहित्य की केंद्रीय चेतना एक ही रहती है।

काव्यशास्त्रीय शोध

काव्यशास्त्र काव्य और साहित्य का दर्शन तथा विज्ञान है। यह काव्य कृतियों के विश्लेषण के आधार पर समय– समय पर उद्धावित सिद्धांतों की ज्ञान राशि है। काव्यशास्त्र के लिए पुराने नाम साहित्य शास्त्र का अलंकार शास्त्र है साहित्य के व्यापक रचनात्मक वांग्मय को समेटने पर इसे समीक्षा शास्त्र भी कहा जाने लगा[7]। यह दर्शनशास्त्र की भांति ही सूक्ष्म और गहन है। परंपराओं का अखंड सातत्य भारतीय चिंतन की सामान्य विशेषता है। रस चिंतन की जिस परंपरा का विकास आचार्य भरत से हुआ था वही आनंद वर्धन, अभिनव गुप्त, मम्मट, विश्वनाथ, पंडित राज जगन्नाथ से होती हुई आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ नगेंद्र आदि तक अखंड रूप में अग्रसर होती रही। इतना ही नहीं अलंकारवादियों, रीतिवादियों, वक्रोक्ति वादियों आदि ने भी रस को

अपने चिंतन का विषय बनाया और इसे उचित महत्ता भी प्रदान की इस प्रकार काव्य सिद्धांतों के आचार्य ने वस्तुनिष्ठ तथा तर्क सम्मत दृष्टि से काव्य के केंद्रीय सृजनात्मक तत्व का अनुसंधान किया। कवि के उस मौलिक सृजनातक सौंदर्य या चारुत्व को ही भामह, दंडी आदि आचार्यों ने अलंकार, आचार्य कुंतक ने वक्रोक्ति, आचार्य वामन ने रीति तथा आचार्य आनंदवर्धन ने ध्वनि नाम से अभिहित किया है। यह सभी आचार्य अपने मत की प्रतिष्ठा के लिए दूसरे मतों को स्वमत में समाहित करके अपने मत की सर्वांगीणता सिद्ध करते दिखाई पड़ते हैं।

इस प्रकार समस्त भारतीय काव्यशास्त्र चिंतन में अनेकता में एकता और एकता में अनेकता के दर्शन होते हैं। रीति, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि के दर्शन होते हैं। रीति, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि, औचित्य काव्य के सत्य है तो रस सब सत्यो का भी सत्य है।

रस सिद्धांत काव्य– संवेदना और लोक संवेदना में तादात्म्यखोज करता है। अतः इसकी दृष्टि काव्य सापेक्ष के साथ–साथ लोक सापेक्ष भी है। रस सिद्धांत अपने चिंतन में सर्वाधिक जनतांत्रिक है कितु यह भी स्मरणीय है कि अलंकार रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि के बिना सरस काव्य की सृष्टि संभव नहीं है। अतः इसकी सत्ता और महत्ता भी सर्वथा स्वीकार्य है। काव्य शास्त्रीय शोध में भारतीय काव्यशास्त्र के साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र भी समाहित है। वर्तमान भारतीय काव्यशास्त्र है चिंतन पर पाश्चात्य काव्यशास्त्र चिंतन का प्रचुर प्रभाव पड़ा है। ऐसी स्थिति में प्रभाव निरूपक शोध साथ ही तुलनात्मक शोध के भी नए आयाम उद्घाटित हुए हैं।[8]

काव्यशास्त्रीय शोध क्षेत्र को दृष्टिकोण में रखते हुए डॉ हरिश्चंद्र वर्मा ने अपनी पुस्तक शोध प्रवृत्ति में लिखा है कि काव्यशास्त्र शोध क्षेत्र को 3 वर्गों में बांट जा सकता है –

1. भारतीय काव्यशास्त्रीय अध्ययन
2. भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन
3. किसी कृति का काव्य शास्त्रीय अध्ययन

1. भारतीय काव्यशास्त्र के अध्ययन के अंतर्गत अलंकार रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, रस, औचित्य नायक संप्रदायों का अलग–अलग विकासात्मक अध्ययन और मूल्यांकन किया जा सकता है

- सभी भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांतों के रस सिद्धांतों के रस चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं
- भारतीय काव्यशास्त्र सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन
- भारतीय काव्यशास्त्र की दृष्टि में काव्य का स्वरूप
- भारतीय काव्यशास्त्र चिंतन के दो सीमांत लोक और अध्यात्म

रस सिद्धांत का सौंदर्यशास्त्र, मनोविज्ञान, नीति शास्त्र, संस्कृति आदि आनंद विधावर्ती दृ ष्टियो से अध्ययन (यथा– रस और सौंदर्यशास्त्र, रस और मनोविज्ञान आदि)

भारतीय काव्यशास्त्र संप्रदाय के विकास का वैज्ञानिक इतिहास (भारतीय काव्यशास्त्र का वैज्ञानिक इतिहास)

2. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र के तुलनात्मक के अध्ययन अंतर्गत विभावन व्यापार और काव्य बिंब को शोध विषय बनाया जा सकता है

- साधारणीकरण और संप्रेषगुणीयता का सिद्धांत
- रीति सिद्धांत और शैली विज्ञान
- ध्वनि सिद्धांत और प्रतीक योजना
- भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य की दृष्टि में काव्य का स्वरूप (काव्यानुभूति, काव्य भाषा, काव्य प्रयोजन आदि)
- भारतीय काव्यशास्त्र चिंतन पर पाश्चात्य काव्यशास्त्र का प्रभाव
- भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन

2. किसी कृति काव्यशास्त्र की दृष्टि से अध्ययन के अंतर्गत किसी एक रचना या किसी एक कवि को आधार मानकर उस रचना या उस कवि की कृतियों का काव्यशास्त्र अध्ययन किया जा सकता है। जैसे– संस्कृत साहित्य के शोधार्थियों के लिए अनुकूल शोध विषय–अंबिकादत्त व्यास कृत शिवराज विजयरू रस सिद्धांत, रामायण में बिंब विधान, इसी प्रकार हिंदी साहित्य के क्षेत्र में धर्मवीर भारती के काव्य मैं पति की योजना, बिहारी सतसई में वक्रोक्ति, साकेत में बिंब विधान आदि। काव्य शास्त्रीय शोध की पद्धति सामान्य शोध पद्धति से भी नहीं है यह भी तथ्य संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण और निष्कर्षण की प्रक्रियाओं पर आश्रित हैं।

भाषा वैज्ञानिक शोध

भाषा और विज्ञान इन दो शब्दों के योग से भाषा विज्ञान नाम निष्पन्न हुआ है। भाषा विज्ञान भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भाषा वैज्ञानिक शोध पद्धति यह शोध की शास्त्रीय पद्धति है। इसके अंतर्गत भाषा की संरचना का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है।[9]

डॉ. श्यामसुंदर दास – भाषा विज्ञान और शास्त्र को कहते हैं जिसमें भाषा शास्त्र के विभिन्न अंगों और स्वरूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाता है।[10]

डॉ. देवेंद्र नाथ शर्मा ने भाषा विज्ञान की भूमिका में पृष्ठ 176 पर लिखा है कि भाषा विज्ञान का सीधा अर्थ भाषा काविज्ञान और विज्ञान का अर्थ विशिष्ट ज्ञान। इस प्रकार भाषा का विशिष्ट ज्ञान भाषा विज्ञान कहलाएगा। जिसके अंदर भाषिक अध्ययन के सभी पक्ष और पद्धतियां समाविष्ठ है।

भारत में भाषा शास्त्रीय चिंतन का विकास वैदिक काल से ही हो गया था। वेदों के उपरांत छरू वेदांगों – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष में से शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त का सीधा संबंध भाषा विज्ञान से है। शिक्षा का संबंध ध्वनि विज्ञान से है। शिक्षा वेदांग में स्वरों और व्यंजनों के उच्चारण का बोध कराया गया है।' व्याकरण" नामक वेदांग में पद विज्ञान

और वाक्य विज्ञान पर प्रकाश डाला गया है तथा निरुक्त में शब्दों की व्युत्पत्ति का विवेचन है। वेदांगों के अतिरिक्त भाषा विज्ञान के विकास में योगदान देने वाले ग्रंथ प्रतिशाख्य हैं।

संस्कृत विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि भारत के प्राचीन व्याकरण आचार्यों की तुलना में यूनान के प्राचीन भाषा शास्त्रियों का चिंतन पर्याप्त अविकसित और अवैज्ञानिक था। इस तथ्य की पुष्टि जैस्पर्सन के निम्नलिखित कथनों से होती है–

"Science presupposes careful observation and systemetion on Language, we find very little. The earliest masters in linguistic observation and classification are that old Indian Grammarians."

अर्थात् विज्ञान की प्रार्थना आवश्यकता है तथ्यों का शतक निरीक्षण और व्यवस्थित वर्गीकरण, जिसका भाषा के विषय में लिखने वाले यूनानी यों में बहुत ही कम अंश है। मासिक निरीक्षण और वर्गीकरण के क्षेत्र में तो भारत के प्राचीन वैयाकरणिक ही सबसे पहले मर्मज्ञ थे।[11]

भारत में संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि प्राचीन भाषाओं की तुलना को ध्यान में रखकर सर विलियम जोंस ने जिस तुलनात्मक भाषा विज्ञान का सूत्रपात किया था। उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए विशप कोल्ड वेल जिन्होंने 1856 में द्रविड़ भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण लिखा। इनके बाद जॉन बीम्स आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर व्याकरण लिखा। इनके बाद जॉन बीम्स ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन कर व्याकरण लिखा। इस प्रकार भारतीय वैज्ञानिकों की सुधीर की परपरा में हिंदी तथा हिंदी की विभिन्न बोलियों के संबंध में डॉ. बाबूराम सक्सेना, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, श्री कामता प्रसाद गुरु, आचार्य केशवदास वाजपैई, डॉ. भोलानाथ तिवारी आदि ने अहम भूमिका निभाई। भाषा वैज्ञानिक शोध तीन प्रमुख धुरियों के आस–पास टिका हुआ है।

- एक किसी भी भाषा का वर्णनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन केवल भाषा से संबंधित होता है क्योंकि यह प्रदत्त समय पर होता है, ऐतिहासिक अध्ययन भाषा या भाषाओं के समूह के इतिहास और उसमें क्या कुछ संरचनात्मक बदलाव आए हैं, इनसे संबंधित होता है।
- सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान किसी भाषा के चित्रण हेतु ढांचा सर्जन के साथ–साथ भाषा के सार्वभौम पहलुओं के बारे में सिद्धांतों से संबंधित होता है, दूसरी तरफ अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान क्रिया पारस्परिक क्रिया का भाषा विज्ञान है तथा यह अपने आप में ही एक विषय क्षेत्र है।
- प्रासंगिक और स्वतंत्र भाषा विज्ञान – प्रासंगिक भाषाविज्ञान इस बात से संबंधित होता है की भाषा किस तरह विषय में उपयुक्त बैठती है, इसके विपरीत स्वतंत्र भाषा में भाषाओं पर उनके अपने लिए और भाषा से संबंधित बाह्यताओं के बगैर विचार किया जाता है।[12]

भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के चार प्रमुख पद्धतियां है – वर्णात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक और प्रायोगिक[13]

1. वर्णात्मक –

किसी भाषा के किसी एक समय में प्राप्त स्वरूप का ध्वनि, पद, वाक्य एवं अर्थ की दृष्टि से किया गया भाषिक अध्ययन ही विवरणात्मकध्वर्णात्मक अध्ययन कहलाता है। आचार्य पाणिनी को अष्टाध्यायी इस पद्धति का उत्तम उदाहरण है।[14]

2. ऐतिहासिक

ऐतिहासिक भाषा विज्ञान में यह पता लगाया जाता है कि किसी भाषा में समयानुसार कई बार सदियों के बाद और कई बार स्थान विशेष के बाद कैसे बदलती है। भारतवर्ष में एक कहावत प्रसिद्ध है –

"कोस कोस पर बदले पानी चार कोस पर वाणी"[15]

देश में हर कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और चार कोस पर भाषा अर्थातरू वाणी भी बदलती है । इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक पद्धति के द्वारा किसी भाषा के प्राचीन से लेकर अर्वाचीन काल तक के काल क्रमिक विकास का ध्वनि, शब्द, वाक्य, अर्थ आदि सभी भाषिक घटकों की दृष्टि से क्रम बद्ध अध्ययन किया जाता है। ऐतिहासिक पद्धति से किसी भाषा की संरचना में विभिन्न कालों में घटित घटिया परिवर्तनों को भली–भांति समझा जा सकता है। ऐतिहासिक पद्धति का मूल आधार भी वर्णात्मक पद्धति है। भाषा परिवारों के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन भी ऐतिहासिक पद्धति से किया जाता है।

3. तुलनात्मक पद्धति

तुलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में किसी एक ही भाषा परिवार की दो या दो से अधिक भाषाओं के ध्वनि, शब्द, वाक्य, अर्थ के आधार पर संरचनात्मक तुलना की जाती है। यह तुलनात्मक अध्ययन भाषाओं के प्राचीन एवं अर्वाचीन रूपों का भी हो सकता है। तुलनात्मक पद्धति से भाषाओं के संरचनात्मक साम्य– वैषम्य का बोध होता है। भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण का आधार वास्तव मैं तुलनात्मक अध्ययन ही है।

4. प्रायोगिक पद्धति

वर्तमान काल में भाषा शिक्षण मैं प्रायोगिक पद्धति अत्यधिक उपयोग में लाई गई है। कुछ दशकों में यूरोप, जापान, अमेरिका आदि में बहुत लोकप्रिय सिद्ध हुई है। नूतन भाषा शिक्षण के लिए भाषा शिक्षण प्रयोगशाला का उपयोग किया जाता है। प्रयोगशाला में ग्रामोफोन, रेडियो, टेलीविजन, टेप रिकॉर्डर, सुर विश्लेषक आदि शिक्षण मंत्रों की सहायता से भाषा सिखाई जाती है। किसी क्षेत्र की विशिष्ट बोली की शब्दावली के अर्थ वैज्ञानिक अध्ययन के माध्यम से उस क्षेत्र के संस्कृति का प्रामाणिक अध्ययन प्रस्तुत किया जा सकता है।

शैली वैज्ञानिक शोध[16]

शैली और विज्ञान, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है शैली का विज्ञान अर्थातरू जिस विज्ञान में शैली का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप में अध्ययन किया जाए वह शैली विज्ञान है।

शैली विज्ञान भाषा विज्ञान एवं साहित्य शास्त्र दोनों की सहायता लेता हुआ भी दोनों से अलग स्वतंत्र विज्ञान है। शैली विज्ञान एक और भाषा शैली का अध्ययन साहित्य शास्त्र के

सिद्धांतों के आधार पर करता है जिसमें रस, अलंकार, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति, शब्द शक्ति, गुण, दोष, प्रतीक वृति आदि आते हैं वहीं दूसरी ओर शैली विज्ञान के अंतर्गत भाषा शैली का अध्ययन भाषा विज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर किया जाता है जिसमें भाषा की प्रकृति और संरचना के अनुशीलन को महत्व दिया जाता है।

शैली विज्ञान के अध्ययन की मुख्यतः दो धाराएं प्रचलित है –

1. साहित्य शास्त्र के आधार पर

इसमें किसी कवि, कृति या लेखक की शैली का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है यथा – अलंकार, रस, रीति, गुण दोष, वक्रोक्ति, वृत्ति प्रवृत्ति, छंद बिंब आदि के आधार पर देखा जाता है कि लेखक या कवि ने साहित्य शास्त्र के सिद्धांत का अनुसरण करते हुए अपनी कृति की रचना की है या नहीं। इस प्रकार का अध्ययन साहित्य शास्त्र के क्षेत्र की विषय वस्तु मानी जा सकती है।[17]

2. भाषा विज्ञान के आधार पर

किसी कवि या रचना में प्रयुक्त भाषा की प्रकृति और संरचना के तत्वों का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हैं। प्रकृति की संरचना के आधार पर भाषा के पांच तत्वों – ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ के आधार पर देखा जाता है कि कवि की भाषा में कहां ध्वनि चयन, ध्वनि विचलन, ध्वनि समानांतर किया गया हैद्य इसी प्रकार शब्द स्तर, रूप स्तर, वाक्य स्तर एवं अर्थ के स्तर पर अध्ययन किया जा सकता है। वाक्यों में लोकोक्तियों, मुहावरों के विचलन का भी अध्ययन किया जा सकता है।

पाठानुसंधान

पाठानुसंधान में जब किसी कृति कार की 100 हस्तलिखित मूल पांडुलिपि उपलब्ध नहीं होती तथा समकालीन या परवर्ती प्रतिलिपिकारों के द्वारा तैयार की गई मूल पांडुलिपि की प्रतिलिपि यही प्राप्त होती है। आदर्श प्रतिलिपि वही मानी जाती है जो मूल पांडुलिपि की अक्षरशरू शुद्ध नकल हो। इसके लिए प्रतिलिपि कार में भाषा और विषय की गंभीर जानकारी भी अपेक्षित मानी गई है।

पाठानुसंधान का कार्य अन्य प्रकार के शोध कार्यों से स्वरूपतरू भिन्न होने के कारण शोधक में भी भिन्न प्रकार की प्रतिभा की क्षमताओं के अपेक्षा करता है। यह कार्य स्थाई महत्व का है जो अनेक भावी अनुसंधानों के लिए मूल्यवान शोध्य सामग्री प्रस्तुत करता है। इससे एक तिरोहित होती रचना का उद्धार होता है तथा विलुप्त होता हुआ रचनाकार प्रकाश में आता है । अतः यह कार्य ऐतिहासिक महत्व का है।[18]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि साहित्यिक शोध के विभिन्न आयामों, पद्धतियों के माध्यम से अनुसंधानकर्ता को शोध के लिए नए विषय के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने और शोध प्रविधि का चयन करने में सहायता प्राप्त होगी । साथ ही साहित्यिक शोध का मनोविज्ञान, राजनीतिक शास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, दर्शन आदि अन्य दृष्टियां भी यथा स्थान अभिव्यक्ति का माध्यम होती है द्य इस प्रकार शोधक कृति में निहित समग्र जीवन दर्शन को भी अपने शोध का आधार बना सकता है और किसी एक दृष्टि को भी।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :–

1. साहित्य दर्पण प्रथम परिच्छेद
2- https://testbook-com
3. Hindi Chetan Bharti An Educational Blog.
4. शोध प्रविधि – डॉ. हरिश्चंद्र शर्मा – हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकुला
5. शोध प्रविधि – डॉ. हरिश्चंद्र शर्मा – हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकुला
6. शोध प्रविधि – पेज न. – 57
7. hi-m-wikipedia-org
8. शोध प्रविधि – पेज न. – 61
9- hi-m-wikibooks-org
10. हिंदी व्याकरण और भाषाविज्ञान डॉ. ज्ञानशंकर पाण्डेय– रवि प्रकाशन सी– 217 निरालानगर लखनऊ
11. शोध प्रविधि – पेज न. – 65
12. ब्रजेश प्रियदर्शी – भाषा विज्ञान के क्षेत्र में रजगार के अवसर
13. शोध प्रविधि – डॉ. हरिश्चंद्र शर्मा – हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकुला
14. शोध प्रविधि – डॉ. हरिश्चंद्र शर्मा – हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकुला
15- https://hi-quara-com
16. hi-m-wikipedia-com
17. शोध प्रविधि – डॉ. हरिश्चंद्र शर्मा – हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकुला
18. शोध प्रविधि – पेज न. – 82
19. भाषा अनुसन्धानः सांस्कृतिक सन्दर्भ– डॉ. गोरख काकडे सरस्वती भुवन कला, वाणिज्य महाविद्यालय, औरंगाबाद
20. भाषा वैज्ञानिक अनुसन्धान और सामाजिक उपादेयता – डॉ. वसंत मोरे